त्रयोदश स्तरंग:

ग्रन्थ ज्ञान बोध

कबीर वचन

साखी :- सतगुरु जीव ज्ञान को, शब्द का दिखाये सार ॥
सार शब्द जो कोई जपे, वही उतरता पार ॥

चौपाई

भौसागर है अगम अपार । जिसमे डूबा सब संसार ।
पार उतरना सब कोई चाहे । शब्द बिन पार उतर ना पाये ।
इसका जीव थाह नही पाते । बिन सतगुरु सब डूबे जाते ।
जग जीवों को हम समझाते । सतगुरु केवट पार लगाते ।
यह जग डूबा सब मझधार । सतगुरु भक्त हुये भवपार ।
सत्नाम की जो ~~किम~~ करे पुकार । वही उतरेंगे भव के पार ।
सतपुरुष है अगम अपार । उनका सब मैं कहूँ विचार ।
आदि अनाम ब्रह्म है न्यारा । निराधार में किया पसारा ।
उस पुरुष का ध्यान लगाए । तन छोड़ जीव लोक सिधाये ।
कहे कबीर नाम जो जपता । भरम छोड़ भवसागर तरता ।

साखी :- आदि ब्रह्म हृदय बसाइये, छोड़ भरम अज्ञान ॥
कहे कबीर जग जीव से, पालो पद निरवान ॥

साखी/सोरठा :- बिना नाम कोई उतरा नही, भवसागर के उस पार ॥
कहे कबीर सब जीव से, जपिये नाम अपार ॥

चौपाई

सुनो धर्म मैं तुम्हे सुनाता । आदि नाम मैं सबको बताता ।
सब जग को मैं यह समझाया । जीव अज्ञान समझ नहीं पाया ।
जो जीव सत ज्ञान ना जाने । कहे वचन वह नहीं माने ।

Date

हमको कहें जुलहा मतिहीना । ब्रह्मा विष्णु शिवराम ना जाना ।
ऐसे भक्त नहीं देखे हमने । ब्रह्मा विष्णु भुलाये जिसने ।
इसने हरि का मर्म ना पाया । भक्ति को ना ये हृदय बसाया ।
ब्रह्मा विष्णु शिव जग उपजाये । यही तीनो संसार रचाये ।
रावण हला था राम की नारी । राम किये युद्ध उससे भारी ।
हर सीता को रावण लाया । राम ने तब उसे मिटाया ।
महिमा इनकी कह नहीं पाते । त्रिदेव लीला सभी रचाते ।

साखी :- राम गुणगान सब करे, है ये त्रिलोकी नाथ ।।
जगजीव कहें कबीर से, सुनो जुलहा ये बात ।।

चौ०

जग सारा हम समझायें । धर्मदास हम तुम्हें सुनायें ।
आदिनाम जग को बताये । जिसको जीव समझ ना पाये ।
आदि नाम सबको बताया । जग जीवों को ज्ञान सुनाया ।
जीव हमारा भेद ना पाये । अज्ञानी क्यों रार मचाये ।
आदि नाम की सुध बिसराये । माया में सब जग लपटाये ।
किसी ने साहिब को ना पाया । राम कृष्ण से जग ध्यान लगाया ।
ऐसे भूल गया संसार । कैसे उतरे भव से पार ।
कहें कबीर जपो निज नाम । जब पहुंचे अमरपुर धाम ।
साहिब नाम नहीं कोई जपता । तभी काल उनको ठगता ।
सब कोई नाम जपो रे भाई । छोड़ो पाप और चतुराई ।
भरमजाल मन नाहीं फँसाना । सत्त पुरुष से ध्यान लगाना ।
दुनिया में मतिहीन भटकते । नाम बिहीन यमलोक पहुंचते ।
जीव कोई विरला पाते । मत यही हम उसे बताते ।

साखी (दोहा) :- कहें कबीर जगजीव से, सुनो जगत यह ज्ञान ।।
त्रिलोकी नीचे रहते सभी, ऊपर है सतगुरु नाम ।।

चौपाई

कहें कबीर धर्म तुम्हें सुनाता । जग जीव क्या बताता ।
आदि नाम हम सबको बताये । जीव अज्ञानी मर्म ना पाये ।
रामकथा जग हमें सुनाया । (तुम सुनो मैं तुम्हें बताया ।)

जगत हमको कहे अज्ञान । हरि महिमा ना जाने सुख महान ।
नीच जात और भक्त कहाये । हरि के दरश कभी ना पाये ।
वेद पुराण गीता हमने जानी । हमको सुनाये विचित्र कहानी ।
वेद हमारा हमको बताता । रामचन्द्र है समरथ दाता ।
चार वेद ब्रह्माजी रचाये । जुलाहे क्यूँ अभिमान दिखाये ।
ब्रह्मा विष्णु नहीं शिव से देवा । ऋषि मुनि सब करते सेवा ।
ले अवतार जग में आये । शालिग्राम में खुदको बसाये ।
इनको ही जग सारा ध्याता । जुलाहे उलटा ज्ञान बताता ।
वेद शास्त्र से हम ये जाने । ब्रह्मा विष्णु शिव को माने ।
सार वेद में हमे देखें भाई । रज गुण तमगुण सतगुण साई ।
~~गीता भागवत पुस्तक~~ पढ़ते ।
गीता भागवत वेद पुराण । सतपुरुष को ध्यावें सब भगवान ।
आदि भवानी तीनो देवा । सारे करते ~~इक~~ पुरुष की सेवा ।
अति उत्तम ये ज्ञान हमारा । मानेना इसको जग ये सारा ।

साखी :- त्रिदेव इनको जपें, करती देवी आश ॥
सुखकारी ये जीवको, हंसा करें विलाश ॥

चौपाई

जगजीव ज्ञान ऐसा माने । धर्मदास जो तुम्हे बखाने ।
or जगजीव ज्ञान ऐसा माने । धर्मजी क्या तुम्हे बखाने ।
जगत की ऐसी उलटी रीती । नाम हीन करते काल से प्रीती ।
सब कथा मैं तुम्हे सुनाया । वेद रीति मैं तुम्हे बताया ।
नाम की महिमा बताते ~~वे~~ पुराण । वेद लिखा तुम जानो ज्ञान ।
छः शास्त्र मिल झगड़ा करते । ब्रह्म रुप वह नहीं समझते ।
दूसरा कोई इन्होने जाना । भ्रम विवाद मिल सबने ठाना ।
मूल नाम ना कोई पाया । पुराण पढ़के जग भरमाया ।
शास्त्र लिखा जो सत्य समझते । निश्चित वह नरक में पड़ते ।
कहते मूरख हमने पाया । मूल वस्तु बिन जन्म गवाँया ।
पुरुष महिमा शास्त्र बखाने । जीव अभागे यह ना जाने ।
पढ़ पुराण और वेद बखाने । पुरुष भेद जग नहीं जाने ।
वेद ~~चे~~ पढ़े और भेद ना जाने । नाहक जगत झगड़ा ठाने ।

Date

वेदों ने भी यही पुकारा । एक पुरुष सबसे न्यारा ।
यह जगत ना उसको जाने । तीन देव की भक्ति ठाने ।
त्रिदेव की जो करते भक्ति । उनकी कभी ना होती मुक्ति ।
तीन देव का अजब ख्याल । देवी देव प्रपंची काल ।
इनमे मत भटको अज्ञानी । काल झपट पकडे प्राणी ।
तीन देव पुरुष खोज ना पाये । जीव ~~जग~~ जगत के सब भरमाये ।
सत्पुरुष को जो भी ध्याता । काल देख उसे घबराता ।
सब लोगो को यह बताना । जग जीवों का भरम मिटाना ।

साखी । रूप देख भटको नहीं, कहैं कबीर विचार ॥
ध्यान करो जो पुरुष का, वही उतरता पार ॥

चौपाई

जो भी नजर काल को आता । तत्काल वह उसको खाता ।
मूरत पूज मुक्त नहीं होते । काहे जन्म अकारथ खोते ।
यह जग करे मूरत पूजा । करे गर्व नहीं हमसा दूजा ।
पण्डित बहुत भक्त कहलाते । पत्थर पूज जन्म गवाते ।
भक्त ऐसे भी बहुत से आये । मूरत पीतल की बनवाये ।
आदि ब्रह्म का भेद ना पाये । पढ़ पढ़ पण्डित जग भरमाये ।
अन्तकाल धर यम के जायें । तब विद्या कुछ काम ना आये ।
पत्थर पूज पढ़ें पुराण । पढ़कर गुण बने विद्वान ।
ज्ञान कथन यह बहुत बखाने । सतगुरु भक्त को नहीं जानें ।
ऐसा मत ब्राह्मण धारेह । अन्त गये काल के द्वारे ।
असुर अंश नहीं अपना दिखाओ । आदि नाम को नहीं भुलाओ ।
धर्मदास देखो ये जग रीती । सत्य छोड़ झूठ से प्रीती ।

साखी ।- सत्यशब्द जग जाना नहीं, कहैं कबीर बखान ॥
यह जग भूला बावरे, करें ना सतगुरु ध्यान ॥
ब्राह्मण भूले बावरे, सर्गुण मत के जोर ॥
लाख चौरासी भोगते, पारब्रह्म के चोर ॥

चौपाई

सर्गुण का नहीं होता सार । होता निर्गुण नाम अपार ।
निर्गुण से सर्गुण होता । सर्गुण में यह जग खोता ।
रजगुण तमगुण सतगुण कहते । सब लुटा के ज्ञान जो लेते ।
तीन गुण से सर्गुण बनता । चौथा पद निर्गुण कहता ।
निर्गुण नाथ काल कहाये । उत्पन्न करके जीव को खाये ।
सबके ऊपर नाम है न्यारा । सूल जगत का साहिब प्यारा ।
जीव उन्हें जान ना पाते । काल अंश उन्हें भरमाते ।
त्रिदेवों ~~को~~ पूजे ये जग सारा । सत्य कबीर नाम रस प्यारा ।
त्रिदेवों को ये जग ध्याता । सत्य कबीर नाम रस पाता ।
नाम रस जो भी पाये । आवागमन ना उसे सताये ।
सतगुरु भक्ति जो भी करता । भेदभाव ना अवगुण रखता ।
आदिनाम का गुण जो गाता । भवसागर फिर नहीं आता ।
आदिनाम की जिसको आशा । सतगुरु काटें काल की फाँस ।
आदिनाम है गुप्त अमोला । धर्मदास मैं तुमसे बोला ।
गुप्त मत जिसने पाया । घर छोड़ वैरागी कहाया ।
आदिनाम गुप्त संसार । पाकर जीव हुये भवपार ।
धर्म जगत ये मूर्ख महान । कोई ना जाने पद निरवान ।
इस कारण जग में आया । सबको आदिनाम बताया ।
तुम अब यह ज्ञान सुनाओ । सब जीवों का भरम मिटाओ ।
अब मैं तुमको सब समझाता । तीन देव उत्पत्ति सुनाता ।
साहिब लीला एक रचाते । वही अब हम तुम्हें बताते ।
संक्षेप में कुछ समझाते । संशय तुम्हारे सभी मिटाते ।
भरम पैदा करते वेद पुराण । जग जाना नहीं आदिनाम ।
राम राम सब जगत बखाने । आदि नाम कोई बिरला जाने ।
सबको पता है राजा राम । उनको तुमसे किया भेद बखान ।
ज्ञानी सुन हृदय में बसाते । मूरख सुन व्यर्थ गवाते ।
पिता निरंजन और आदि माता । ये यम दारुण वंश के दाता ।
पहले निरंजन राज बनाये । पीछे से माया उपजाये ।
माया रूप देख अति शोभा । देव निरंजन तन मन लोभा ।
धर्मराज को काम सताया । आदि माया को वह खाया ।
पेट से देवी गुहार लगाये । आकर साहिब मुझे बचाये ।

Date

पुकार सुन साहिब आते । अष्टंगी का बंद छुड़ाते ।
धर्मराज करते भोग विलास । माया को भी काम की आस ।
माया निरंजन संग में आये । तीन लोक दोनों ने खाये ।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये । ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये ।
देव तीनों राज चलाते । इनसे जीव सब धोखा खाते ।
पुरुष ज्ञान कैसे पायें । काल निरंजन जग भरमाये ।
तीन लोक पुत्रों के देते । बास शुन्य स्थान में लेते ।
अलख निरंजन शून्य ठिकाना । ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना ।
तीन देव खोजने जाते । निरंजन पता वह ना पाते ।
अलख निरंजन वीर अपार । जग जीवों का करे अहार ।
ब्रह्मा विष्णु शिव भी खाये । खाकर सबको धूल उड़ाये ।
काल पुत्र ये तीनो देवा । जग सब करता इनकी सेवा ।
राम रूप माया ने बनाया । राजा लंका का उसने सताया ।
दस अवतार माया धरती । काल अपंबल सबको छलती ।
काल पुरुष कोई ना जाना । ईश्वर सबने काल को माना ।
ऐसा राम सकल जग जाने । आदि ब्रह्म को ना पहचाने ।
तीन देव असुर अवतार । उनको भजे सकल संसार ।
तीनों गुण का यह विस्तार । धर्मदास मैं कहूँ पुकार ।

साखी :- गुण तीनों की भक्ति में, भूल पड़ा संसार ।।
कहें कबीर सतनाम बिन, कैसे उतरे पार ।।

सोरठा/साखी :- जग जीव अज्ञान अति, जाने नहीं आदि नाम ।।
माया लिप्त सब हुये, पहुंचे यम के धाम ।।

चौपाई

कबीर ना जाने ऐसा राम । धर्मदास सुन लगाकर कान ।
शून्य पड़े पुरुष का धाम । वहाँ साहिब हैं आदि नाम ।
धाम वही है सबका दाता । सत्य बात मैं तुम्हें बताता ।
रहते पुरुष सबके पार । आदि अनादि पुरुष अपार ।
आदि ब्रह्म इक पुरुष अकेला । उनके संग नहीं कोई चेला ।
जाने नहीं जग उनको सारा । बिना नाम कैसे यम का चारा ।

Date

अज्ञानी जन नहीं जपते नाम । नाम जपे वो संत सुजान ।
सच्चा साहिब सोर भजना । सब जगत से तुम ये कहना ।
धोखे में जीव जन्म गँवाते । झूठी लगन सब जीव लगाते ।
ऐसा जग से कहो समझाये । धर्मदास जीव जगाओ जाये ।
पास तुम्हारे जो भी आयें । सतलोक बास उन्हे कराये ।
ज्ञानहीन के सुन दः करमा । धर्मदास उनके ये धरमा ।
बह जाते वो भवजल माहीं । आदि नाम को जाने नाहीं ।
पीतल पत्थर पूजने लागे । आदि नाम घट से त्यागे ।
तीरथ व्रत करे संसार । नेम धर्म बहुत करे विचार ।
साधु बन विभूति रमाते । घर घर भिक्षा लेने जाते ।
जग जीव को ज्ञान बताते । शब्द बिना पुरुषद्रोही बनाते ।
ज्ञानहीन जो गुरु कहाता । आप भ्रमित जग भरमाता ।
काम क्रोध मद लोभ बिकार । साधु त्यागे ऐसे विचार ।
ज्ञान ऐसा जग फैलाया । साहिब सुध जग बिसराया ।
दो रंगी यह दुनिया सारी । संगत असुर की इसको प्यारी ।
तीरथ व्रत तप पुण्य कमाई । कालनेमाया सभी रचाई ।
माया जाल जग ऐसा फँसता । नाम बिन नरक में पड़ता ।
जो कोई भक्त हमारा बनता । भेदभाव वो सारे तजता ।
तीरथ व्रत वो सभी भुलाता । सतगुरु चरण से ध्यान लगाता ।
मन उसके क्रोध ना काम । पाता वही पावन धाम ।
मन अपना जो स्थिर करता । हंस वही भवसागर तरता ।
सतगुरु भक्त वो पूरा बनता । नित्य दर्शन पुरुष के करता ।
साधु रीत यही अपनाते । सार युक्ति हम समझाते ।

साखी :- सतनाम निज मूल है, कहें कबीर समझाय ।
तीन लोक ढूंढे सभी, परम पुरुष नहीं पाय ।

सोरठा / साखी :- सतगुरु नाम सेवा करो, करो सतगुरु गुणगान ।
सतगुरु चरण प्रेम से, पाइये पावन धाम ।

Date

चौपाई

पत्थर पूजा हिन्दू करते । मुरदा नमाज मुस्लिम पढ़ते ।
कहें कबीर दोऊ भुलाये । आदिपुरुष मिल नहीं पाये ।
सत्यनाम दोनों को बताना । काल कलेश उनके मिटाना ।
भवसागर कोई तर नहीं पाये । संसार में गोता सारे खाये ।
भव दरिया है अगम अपार । पुरुष भक्त उतरते पार ।
धर्मदास जग को यह समझाओ । नाम बिन नहीं मुक्ति पाओ ।
जो जन भजते निर्भय नाम । वो हंस पहुंचते अपने धाम ।
अजर नाम से लोक सिधाते । दुष्ट काल कुछ कर ना पाते ।
कर्मत्यागे नाम को भजना । आवागमन तुम अपने तजना ।
ब्रह्मा ने जो पंथ चलाया । वो सब मैंने तुम्हे बताया ।
चार वरण और बेद बखान । उसमें फँसते जीव महान ।
जात पात ब्रह्मा ने बनाये । विप्र सबसे ऊंचे बनाये ।
~~ब्रह्मा ने पंथ अपना चलाया । त्रिदेवों का नाम व~~
ब्रह्मा ने पंथ अपना चलाया । तीन गुण जग नाम बताया ।
आदि नाम सुध नहीं पाये । चारों युग यूं भरमाये ।
यह ब्रह्मा की है करतूत । जग में चलाये रीती झूठ ।
ब्रह्माने यह जग भरमाया । सत्त पुरुष का भेद ना पाया ।
तीन लोक काल जाल फैलाया । उसमें सब जग उलझाया ।
जात पात सब भेद विचारे । मिथ्या राह जीव जाते सारे ।
ब्राह्मण ~~भक्ति~~ प्रभु भक्ति नहीं जाने । ब्रह्म रूप वह नहीं माने ।
सार शब्द ब्राह्मण नहीं जाने । आदिनाम तो शूद्र बखाने ।
ब्राह्मण धरते शूद्र अवतार । कराते जो जीव को पार ।
धन्य ~~बशूद्र~~ शूद्र जो सेवा करते । आदि नाम हृदय धरते ।
~~जाती~~ जाति वरण में भेद बताऊँ । जो समझे उसे समझाऊँ ।
जाति वरण सब एक समान । जाति नहीं होती कोई महान ।
जैसा कर्म जो करके आता । वैसी जाति ~~वो~~ यहाँ पर पाता ।
चारो वरण होते एक समान । बनती जाति कर्म समान ।
जाति वरण का चिन्ह ना कोई । कैसे जाति दूसरी होई ।
दूसरी जाति किस विधि मानें । जग अज्ञात भेद ना जाने ।
जाति पात ना प्रभु बनाते । झगड़ा यह जग फैलाते ।
~~जाति यहाँ ना ह~~
जाति वरण ना होते न्यारे । एक जाति जीव जग के सारे ।

Date

एक द्वार जीव सारे आते । जन्म मरण वो सारे पाते ।
एक मार्ग जग आता सारा । कौन ज्ञान से बनता न्यारा ।
जीव सभी एक घर से आये । एक बाप एक माता जाये ।
ऊँच नीच सब सम कर जाने । ऊँच नीच सब झूठ बखाने ।
डाल जनेऊ ब्राह्मण कहलाये । ब्राह्मणी को क्या पहनाये ।
ना हिन्दू ना तुर्क कहाते । ज्ञानहीन जीव धोखा खाते ।
जात वरण को मिथ्या जानो । सत्य कहते निश्चय मानो ।
इस जग को हम अन्धा कहते । नाम बिन यह ऊँचे बहते ।
ऊँच वही जो नाम को जाने । नीच वह जो शब्द ना माने ।
ना कोई वरण ना कोई भेष । शब्द स्वरूप जाते देश ।
सब मिल भक्ति करना भाई । सतगुरु मुख से यह फरमाई ।
यह सतगुरु का ज्ञान है भाई । जो जाने वह लोक सिधाई ।
जाति वरण हम कह सुनाये । धर्मदास तुम जग समझाये ।
ज्ञान यह जीवों को बताना । सत्यलोक जीव पहुँचाना ।

<u>साखी</u> :- यह जग त्रिगुण भक्त है, करें काल की आस ॥
नाम जपे जो विश्वास से, जाये पुरुष के पास ॥
मानो कहा कबीर का, सबको कहें पुकार ॥
भ्रमजाल सब त्यागके, जपिये नाम अपार ॥

<u>सोरठा/साखी</u> :- बिन नाम भवना तरे, जपिये नाम अधार ॥
सत्यशब्द जो ना जपे, जाते वो काल के द्वार ॥

<u>चौपाई</u>

कहें कबीर धर्म तुम्हें सुनाऊं । निज भेद अब तुम्हें बताऊं ।
ये अकह ना ये प्राणी । उत्पत्ति प्रलय ची मेरी वाणी ।
आदि अंत ना ची माया । उत्पत्ति प्रलय ना ची काया ।
सोहं ब्रह्म न नही ओंकार । काल निरंजन नही अवतार ।
दस औतार ना चौबीस रूप । तब नही चो ज्योति स्वरूप ।
जब नही चन्द्र लोक दीप विस्तार । सुकृत नही बनाये थे संसार ।
जब नही लोक चन्द्र सूर्य और तारा । तब नही तीन गुण अवतारा ।
वहाँ नही है दिन और रात । ऊँच ना नीच जात ना पात ।

Date

नहीं सुख पवन ना था पानी । समरथ गति ना किसी ने जानी ।
आदि ब्रह्म तब नहीं आये । आप अकह तब थे रचाये ।
आदि ब्रह्म तब नहीं विस्तार । आप अकह तब थे न्यारे ।
है अनाम अक्षर के माहीं । निःअक्षर कोई जाने नाहीं ।
अमर लोक अमर है काया । अकाल पुरुष जहाँ आप रहाया ।
धर्म निवास वहाँ हमहैं करते । काल अकाल वहाँ नहीं पहुँचते ।
घर निर्भय पुरुष का लोक । काल ना खाये ना व्यापे रोग ।
समरथ घर है सबसे न्यारा । सबके ऊपर घर है हमारा ।
जिनकी खबर काल ना पाये । तीन देव की कौन चलाये ।
माया काल वहाँ नही पहुँचते । जीव सहायक वहाँ है बसते ।
ऐसा हमारा है सतलोक । जहाँ से आये तुम्हारे लोक ।
जिनकी भक्ति जो भी करता । जन्म मरण वो अपने तजता ।
जीव वहाँ जा करें बिलास । भव कष्ट होते उसके नाश ।
धर्मदास मैंने तुम्हें सुनाया । आदिनाम मैंने तुम्हें बताया ।
जो कोई माने कहा तुम्हारा । निर्भय जाये पुरुष के द्वारा ।
मूरख सतगुरु मर्म ना पाये । भवसागर में गोते खाये ।
सार युक्ति जो तुम्हें सुनाया । ऋषि मुनि कोई भेद ना पाया ।
भाषा ग्रंथ ज्ञान उपदेश । घट अपने करो प्रवेश ।

साखी — सत्य सुख घर लोक में, कहें कबीर समझाय ॥
सत्य शब्द जो भी जपे, स्थिर बैठे जाय ॥

सोरठा / साखी :- सतगुरु पूरा पाइये, पाओ पद निरवान ॥
सतगुरु शब्द मानिये, कहें कबीर बखान ॥

चौपाई

गुरुमुख लेखा अब मैं कहता । भक्त वही विवेक जो करता ।
जो कोई पान परवाना पाता । निकट उसके काल ना आता ।
नाम परवाना जिसने पाया । नाम जपके भरम मिटाया ।
तन मन से गुरु सेवा करता । गुरु को ही प्रभु समझता ।
गुरु से कपट जो भी करता । यम के लोक वह पहुँचता ।
हंस वो काल घर पर जाते । सत्य लोक में वासना पाते ।

Date

हंस के निर्भय घर नहीं पाये । कोटि जन्म इन्हें काल सताये ।
भक्ति करके पूजते देवा । जीव वो करते कालकी सेवा ।
मनुष्य तन वह कभी ना पाते । लाख चौरासी गोते खाते ।
कर्म करे जग जैसे सारा । वैसे भोगे चौरासी धारा ।

साखी :- भक्ति जग सारा करे, पर छूटे ना संसार ॥
कहें कबीर धर्मदाससे, ये जीव ना होते पार ॥

सोरठा (साखी) :- आदिनाम को जान के, छोड़ो कर्म काल के ॥
हृदय इसे बसाय के, तोड़ो भ्रम के जाल ॥

धर्मदास वचन चौ०

धर्मदास जोड़ता अपने हाथ । सुनिये विनती मेरी नाथ ।
~~हे स्वामी तुम पूछो ब~~
हे स्वामी हमे पूछें तुमको । करके कृपा बतायें हमको ।
तुम अविनाशी ब्रह्म कहाते । इस जग में तुम कैसे आते ।
यह सब भेद बताओ स्वामी । तुम सब घट के अंतर्यामी ।
सकल चरित्र तुम हमें बतायें । जग जीव हम उससे चितायें ।
यह जग तब समझे बात । चार युग तुम कहां थे नाथ ।

साखी :- अब प्रभु हमें बताइये, तुम गुरु अगम अपार ॥
धर्मदास विनती करे, सुनिये हे करतार ॥

कबीर वचन चौपाई

धर्मदास मैं तुम्हे सुनाता । यह भेद भी तुम्हें बताता ।
वेद पुराण जग ये जाना । भूला जीव ना पाये ठिकाना ।
तीन लोक को काल सतावे । ब्रह्मा विष्णु पार ना पावे ।
सत्पुरुष तब मुझे पठाये । जीव उबारने हम हैं आये ।
इसलिये आये हम संसार । जग के जीव करे भवपार ।
जग जीव को नाम बताते । पकड़ के हंस सतलोक सिधाते ।
हम हैं सतलोक के वासी । बनकर दास आये काशी ।

Date

ना कोई वर्ण ना कोई भेष । सतपुरुष के थे हम देश ।
वहाँ की रचना अद्भुत भाई । वो मैंने तुम्हे पहले सुनाई ।
और अब तुम्हे समझाये । धर्मदास सुनो ध्यान लगाये ।
धरके देह भवसागर आते । धर्मदास तुम्हे नाम सुनाते ।
कलयुग मे हम काशी आते । दर्शन तुम हमारे पाते ।
~~तब हम नाम कबीर धराये । काल देखके हमे डराये ।~~
तब हम नाम कबीर धराये । काल देख हमें घबराये ।
जो कोई ज्ञान हमारा पाता । काल कपट वो अपने मिटाता ।
अदेह पुरुष नजर है आता । विदेह पुरुष जग जान ना पाता ।
मात पिता ना हमको जाये । पुरुष प्रतापसे हम है आये ।
ये विदेह देह धर आये । जग जीवो के बन्द छुड़ाये ।
नाम जपे वो लोक सिधाता । नाम विहीन को काल सताता ।
गुप्त पुरुष नजर नहीं आये । जीव जगाने तब हम आये ।
चारो युग हम पृथ्वी आये । जग को आदिनाम सुनाये ।
भक्त जो शरणागत आते । उनको हम बंद छुड़ाते ।
जीव जगाके लोक पठाता । हमें देखके काल डराता ।
चारों युग के चारों नाम । माया रहित रहे हम धाम ।
सतयुग सतसुकृत कहलाये । त्रेता नाम मुनींद्र धराये ।
द्वापर मे करुणामय कहाये । कलयुग नाम कबीर धराये ।
चारों युग आदिनाम सुनाता । सज्जन सुनके दौड़ा आता ।
जो जो जीव शरण मे आये । उनको हमने नाम सुनाये ।
आदिनाम गुण जो भी गाता । कर विश्वास अमर पद पाता ।
जो कोई सतगुरु नामको ध्यावे । उनको साहिब पार लगावे ।
पार होकर जो माया तजता । जन्म मरण का संशय मिटता ।
माया त्याग वैरागी बनता । पद अमर उसको ही मिलता ।

धर्मदास वचन

विनय वचन धर्मदास सुनाये । भक्त भाव प्रभु मुझे सुनाये ।

कबीर वचन

भक्त भाव की सुनाऊँ कहानी । ध्यान लगाकर सुनना ज्ञानी ।
भक्त हुये अनेक जग मे भारी । जोगी सन्यासी लठ धारी ।

Date

शीव गोरख और ब्रह्मचारी | ठगती सबको माया प्यारी |
माया हमको जब ठगने आये | गुप्त नाम हम उसे सुनाये |
माया को मैंने दूर भगाया | जीत हम माया को हराया |
माया जाल है कठिन अपार | ऋषि मुनि ना पाये उससे पार |
माया जाल मत तुम फँसना | धर्म यह तुम जगसे कहना |
भवसागर भक्त अनेक हमारे | काल कपट मिटाओ उनके सारे |
मौनी नहीं मुखसे बोलें | भेष बनाके घर घर डोलें |
~~अंग विभूति गले में माला~~ |
अंग विभूति अनेक सजाते | आसन बैठ ध्यान लगाते |
कान फाड़ सिर जटा बढ़ाये | माथे चन्दन तिलक लगाये |
जोगी बनते वस्त्र रंगाये | सतगुरु मिल ना भेष बनाये |
जप तप वह अनेकों करते | आदिनाम ना हृदय रखते |
पत्थर पूज के भक्त कहाते | चन्दन तेल सिन्दूर चढ़ाते |
मानुष जन्म भाग्यसे पाते | नाम बिना व्यर्थ गँवाते |
साधु युक्ति ऐसी तुम्हे बताऊँ | धर्मदास मैं तुम्हे दिखाऊँ |
काम क्रोध लोभ गुमान | इनको मारे सन्त सुजान |
रुखा सुखा भोजन खाता | निशदिन शब्द ध्यान लगाता |
तत्व प्रकृति और बल माया | इन्हें जीत तब साधु कहाया |
~~अन्तः कपट सबको सभीको~~
अन्तः कपट वह सारे भुलाता | क्षमा भाव व्यवहार में लाता |
हार जीत और अभिमान | इससे मुक्त साधु का ज्ञान |
भक्त महान भजन का आगर | शीतल दया प्रेम सुख सागर |
सारे कर्म अपने छोड़ अज्ञान | धर ले केवल निर्गुण ~~ध्यान~~ ध्यान |
धन्य जीव जो साधु बनता | ~~दुर्मति~~ अ दुर्मति अपनी सारी तजता |
साधु जीवन ऐसे बिताते | निर्भय पद तब हंसा पाते |
हम भक्तों की कथा सुनाये | निर्भय पद कोई बिरला पाये |
साधु लक्षण तुम्हें सुनाये | ऋषि मुनि कोई भेद ना पाये |
आदिनाम गुण नितदिन गाना | एक पल को ना इसे भुलाना |
सतसाहिब है सबसे न्यारा | भव तरे जग जपके सारा |
भक्त अनेक जग में आये | करके जोग ना युक्ति पाये |
युक्ति नाम बिन ना होता जोग | झूठी माया का लगाया रोग |
बिन संशय जो नाम को ध्याता | नाम बिन जग डूब जाता |

Date

नाम सुधि जो भी पाया | काल निकट ना उसके आया |
माया त्याग भजो निजनाम | तब हंस जायें पुरुष के धाम |
सबसे कहो लगाके पुकार | सुन ना कोई नर और नार |
~~पुरुष की युक्ति जो युक्ति पाये~~ |
पुरुष की युक्ति जीव ना पाये | मन को इनके सत्य ना भाये |
शिव गोरख पार ना पाये | और जीव की कौन चलाये |
कहे कबीर सुन मेरी वाणी | जोग युक्ति की कहूँ कहानी |
अब गृहस्थी का कहूँ विचार | धर्मदास मैं कहूँ पुकार |
गृहस्थी सतगुरु भक्ति करते | आदिनाम को हृदय धरते |
गुरु-चरण से ध्यान लगाये | गुरु संग ना कपट दिखाये |
गुरु सेवा फल सभी दिलाये | गुरु विमुख नर पार ना पाये |
गुरु वचन को निश्चित मानें | गुरु की सेवा मन में ठानें |
भक्ति ना होती बिन विश्वास | प्रीत बिना नहीं दुविधा नाश |
मांस मछली कि ना सम्मुख जाना | सदा ग्रहण करे अंकुर खाना |
गुरु संग जो चतुराई करता | सेवा हीन नरक में पड़ता |
परधन को व्यर्थ समझता | झूठ वचन ना हृदय धरता |
परनारि को माता मानें | असत्य छोड़ सत्य को जानें |
जीव पर दया सदा दिखाये | बुरे कर्म अपने सभी भुलाये |
हृदय दया जो नहीं रखता | सतगुरु से भेंट कभी ना करता |
गुरु से प्रेम सदा ही रखता | आदिनाम को पल पल जपता |
भक्ति नाम जो भी पाता | काल को खुद से दूर भगाता |

साखी :- पुरुष नाम निशदिन जपो, करो सदा ही प्रीत ॥
सतनाम के जाप से, जाओ भवजल जीत ॥

सोरठा / साखी :- सतनाम लगन लगाय के, भर्म तजे यम जाल ॥
परमार्थ ध्यान लगाइये, चले संत की चाल ॥

चौपाई

गृहस्थी ~~भक्त~~ जो शब्द को माने | आरती वो पूनम की ठाने |
अमावस आरती नहीं कराये | नहीं तो काल घर में समाये |
पाँच दिवस नहीं होते साज | पूनम को करो आरती काज |
पूनम को ध्यान धर्म ने पाया | बनके शिष्य आनन्द पाया |

Date

नाम कबीर ध्यान लगाना । निजनाम यह सबको सुनाना ।
ऐसी करनी गृहस्थी करते । गुरु प्रताप से भवसागर तरते ।

साखी :- भव पार उतरते वही, जिसको केवट से प्रीत ॥
जब सतगुरु केवट मिले, जाओ भवजल जीत ॥

सोरठा / साखी :- ~~कालमुँह वही पड़ें, जो जाने ना सतनाम~~ ॥
काल के मुख वही पड़ें, जो जाने ना सतनाम ॥
शब्द संग भव तरें, कहते कबीर सुजान ॥

चौपाई

सत कबीर गुरु धर्मदास । जीव भेजते पुरुष के पास ।
~~सत गुरु सत कबीर~~
सतगुरु सत कबीर कहाये । जग में रहते खुद को छिपाये ।
सतगुरु आप जग में पधारे । दास तन धरके शब्द पुकारे ।
काल निरंजन सब पर छाया । आदिनाम का भिन्द मिटाया ।
धर अवतार असुर संहारे । जीव जाने यह धनी हमारे ।
इस कारण नरक सोर जीते । जीव अज्ञान समझ ना पाते ।
~~करके बास जीव वही पड़े~~ । ~~सतगुरु को करके जान ना पाते~~ ।
नरक में जीव वो ही जीते । सतगुरु को जो जान ना पाते ।
काल निरंजन तीर अपार । छल इसके जाना ना संसार ।
जीव शिकारी जग बहुतेरे । कर शिकार करे पाप घनेरे ।
दुष्ट अन्याई ऐसा करते । कर शिकार तनिक ना डरते ।
जीव मारकर उनको खाते । जीव दया ना तनिक दिखाते ।
जीवघाती कष्ट बहुत से पाते । काल कष्ट उनको बहुत सताते ।
काग देह धर विष्ठा खाते । जन्म अनेक वो यूँही बिताते ।
जीव दया बिन नहीं मुक्ति पाये । मीन माँस मद राक्षस खाये ।
जीव धर्मदास यह जग बौराये । दुष्ट जीव की कथा सुनाये ।
जीव कष्ट मुझसे सहा नहीं जाता । ज्ञान हीन नर जीव सताता ।
इस कारण हम जग में आये । चालाकी काल चल नहीं पाये ।
पहले लूटे विष्णु मुरारी । फिर लूटे शिव जटधारी ।
लूटे ऋषि और ब्रह्मचारी । और लूटे सकल संसारी ।

Date

चन्दा सूरज और सितारे । कैसे बचते जीव बिचारे ।
देखो धर्म काल की रीती । अब ना परखो रीति अनीती ।
काल निरंजन है बलवान । बचे वही जो जपता नाम ।
काल रीति हम किये बखान । जीवों को दो धर्म तुम ज्ञान ।

साखी :- कहें कबीर धर्मदास से, सुनो लगाकर ध्यान ॥
काल भेद जो जाना नहीं, रहे सदा अज्ञान ॥

सोरठा । साखी :- जीव दया चित धरो, तजो काल बलवान ॥
भवजल पार उतरिये, हृदय रख आदि नाम ॥
परखिये सत्यज्ञान को, सुनिये संत सुजान ॥
हृदय विवेक राखिये, काल वीर बलवान ॥

चौपाई

अजर अमर है आदि नाम । तन मन राखो कबीर सुजान ।
जो जपे धर्मदास कबीर । वो पावे सुख सागर तीर ॥
सतपुरुष ही कबीर कहाये । सब घट में यही समाये ।
सन्त कबीर हैं शब्द अधार । इन्से बना है सब संसार ।
एक ही शब्द इस जग माहीं । जग में पुरुष दूजा नाहीं ।
दूजा पुरुष किसे बताओ । भर्म तुम ये सारे मिटाओ ।
दूजे भाव की ना रखना आस । कहें कबीर यह धर्मदास ।
एक रूप एक अनुहारी । एक पुरुष रचता लीला सारी ।
मैं सुनाया तुमको आदि नाम । पाओ मुक्ति जपकर नाम ।
जो कोई आदिनाम को जाना । काल भय उससे माना ।

साखी :- आदिनाम है मुक्ति का, जपकर पाओ ज्ञान ॥
कोटि जाप संसार में, इन्से मिलना मुक्तिदान ॥

सोरठा । साखी :- बूझो जीव संसार के, आदिनाम निज सार ॥
अमर हंस हुये वही, जो लिये नाम अधार ॥
मन्त्र सभी व्यर्थ हैं, सत्य एक आदिनाम ॥
नाम बिन डूबे सभी, कहते कबीर सुजान ॥

Date

चौपाई

धर्मदास मैं तुम्हें बताऊं । चार गुरु की कथा सुनाऊं ।
चार गुरु संसार में आये । जीव को मुक्ति वह दिलाये ।
हंस को वह लोक पठाते । भवसागर जीव फिर नहीं आते ।
सार शब्द पुरुष का न्यारा । शब्द वही इन्होंने पुकारा ।
सार शब्द काल ना पाये । तीन देव की कौन चलाये ।
शब्द संग हंस घर को जाता । काल देख उसे घबराता ।
सार शब्द मैं तुसे बताया । काल अधीन तेरे बनाया ।
धर्मदास तुमको ज्ञान महान । तुमको बताया मुक्ति नाम ।
जीव को तुम उतारो पार । सौंपे तुमको जग का भार ।
सतयुग शिष्य सहतेजी कहाये । द्वापर चतुर्भुज नाम सुनाये ।
त्रेता शिष्य बंकेजी भाई । कलियुग में धर्मदास गुसांई ।
चार गुरु भवसागर आये । जीव को मुक्ति यह दिलाये ।
यह कथा हम तुम्हें सुनाये । संशय तुम्हारे सभी मिटाये ।
वंश ब्यालिश ~~लोक~~ लोक से आये । और सबको काल रचाये ।
इनको सौंपा जग का भार । जीवों को करिये भव के पार ।
~~धर्मदास तुम~~
धर्म तुम पुरुष अंश कहाये । संशय हमारे सभी मिटाये ।
बनो पंथ भव सागर सार । वंश लगाये सब जीव को पार ।
वंश ब्यालिश भवसागर आये । राज अटल भव माहीं चलाये ।
धर्मदास मैं कहूं विचार । इसविधि उतारो तुम संसार ।

साखी :- नाम भेद जो जानते, वही वंश हमार ॥
अज्ञान दुनिया बहुत है, डूब मरा संसार ॥

सोरठा / साखी :- सार शब्द के ध्यान से, होते भव के पार ॥
नातो यम ले जायेगा, नरक के दरबार ॥

धर्मदास वचन चौ०

धर्मदास तब विनती सुनाते । गुण अब हम पंथ के गाते ।
अमर लोक के आप निवासी । आये क्यों यहां अविनाशी ।
मृत्युलोक किस कारण आये । पापी राजा काल कहाये ।

Date

साहिब कबीर वचन

धर्मदास हम तुम्हें सुनाये | जीव हेतु पुरुष पठाये |
सतपुरुष सातलोक निवासी | आये जीव हेतु हम अविनाशी |
पुरुषदर्श कोई फिर नहीं पाता | ~~त्रिलोक~~ भवसागर में गोते खाता |
तीन लोक होते हैं दुखदायक | अमरलोक जीव को सुखदायक |
जीव काज हेतु हम हैं आये | यमराज से जीव छुड़ाये |
आदि नाम है अनमोल अपार | अकह अगोचर सबका सार |
वहाँ से जग में हम हैं आये | जन्म काशीनगर में पाये |
सतपुरुष हम सदा पुकारें | भवसागर के जीव उबारें |
सम्मुख हमारे जो भी आते | भवपार हम उन्हें लगाते |
बात हमारी जो भी सुनते | कर्मजाल सब उनके कटते |
गर्भ की राह नहीं हम आये | जन्म मरण ना हमें सताये |
पाँच तत्व नहीं हम माहीं | तीन गुण शरीर हमारे नाहीं |
मृत्युलोक हर युग में आते | इच्छारूप हम देह बनाते |

साखी:- पाँच तत्व गुण तीन से, रहित मेरा शरीर ॥
सब कोई हृदय बसाइये, सतगुरु पुरुष कबीर ॥

चौपाई

काल शत्रु हम कहलाते | सत्य शब्द से पार लगाते |
हमारे सम्मुख काल ना आता | हंसो को हैं हम सुखदाता |
जो साहिब हैं रहते लोक | उनको ही जानें सारे लोग |
दुखी नाम बिन तीनों देवा | गण गंधर्व करते जिनकी सेवा |
काल अधीन हैं जग भगवान | बचे वही जो जाने नाम |
सत्य शब्द से हम बलवान | शब्द से पहुंचे हंस को धाम |
जहाँ नाम काल नहीं आये | बिना नाम काल सताये |
ज्ञानहीन ना यह समझता | जीव संग मन काल है रहता |
जीव के संग काल का वास | इसकी अज्ञानी करते आस |
करो नाजो मन है कहता | मन जीव को भ्रमित करता |
कहे कबीर मनजन गँवारी | मन कहा नहीं करो नर नारी |

Date

मन कहा जो भी करता । वह भवसागर बहता ।
काल है भाई मन ये चंचल । मन त्याग बनो तुम निरमल ।
मन के रूप समाई माया । संसार में छाई इसकी छाया ।
मन स्थिर कर शब्द को जाने । यह विधि तत्व पहचाने ।
काल जाल से वो ही छूटे । पुरुष हंस को काल ना लूटे ।
धर्मदास भेद यह तुम सुना । शब्द माहीं बास तुम कसा ।
काल ज्ञान संसार बखाने । काल स्वरूप जग नहीं जाने ।
काल चरित्र हम तुम्हें सुनाये । भेद यह नहीं कोई पाये ।
काया माया झूठी जाने । झूठा सकल जगको माने ।
साहिब नाम झूठा नाहीं । परखो अपने हृदय माहीं ।

साखी :- ~~मन ही रूप~~
~~सोरठा~~ ~~मन ही रूप शून्य का, धर्मदास यह लो जान ॥~~
~~कोई रूप मन का नहीं, वचन कबीर प्रमान ॥~~

~~सोरठा~~ /साखी :- काल से यह जग बना, काल से भय महान ॥
काल नष्ट सबको करे, काल बड़ा शैतान ॥

सोरठा/साखी :- मन ही रूप शून्य का, धर्मदास यह लो जान ॥
कोई रूप मन का नहीं, वचन कबीर प्रमान ॥

चौपाई

परम पुरुष नाम को पाये । इससे हंस लोक सिधाये ।
आदिनाम है जीव रखवारा । नाम जपो सब उनका प्यारा ।
अमरलोक साहिब धाम कहाये । जहां पुरुष दरबार चलाये ।
आदि पुरुष जहां आप अकेला । धर्मराज नहीं मन का मैला ।
अंधियारी रात वहाँ नहीं होती । अमरपुर जलती सदा ही ज्योती ।
आदि पुरुष सम्मुख काल ना आता । तीन देव की कौन चलाता ।
आदि नाम जो ध्यान लगाये । तब हंसा सतलोक सिधाये ।
सतलोक साहिब का ऐसा भाई । हंस को वह सदा सुखदाई ।
आदि लोक में जो कोई जाता । भवसागर में नहीं फिर आता ।
धर्मराज का तिनका तोड़ो । जन्म मरण का संशय छोड़ो ।

Date

बिरले जीव संशय मिटाते । सत्यनाम संग प्रीत लगाते ।
अगम भेद मैं तुम्हें बताया । काल निरंजन पार ना पाया ।
जगजीवों को दो तुम ज्ञान । पहुँचे हंस पुरुष के धाम ।
भवसागर से जीव उबारो । जन्म मरण के संशय टारो ।
जीव मुक्ति मैं ज्ञान बताया । पुरुष भक्त ने नाम को पाया ।
सार युक्ति मैं तुम्हें बताया । भेद नहीं तुमसे कोई छिपाया ।

धर्मदास वचन

धर्म जोड़कर बोले हाथ । सुनिये विनती मेरी नाथ ।
निर्गुण नाम नहीं कोई जाना । सर्गुण श्रेष्ठ सबने माना ।
अज्ञानी नर नहीं कहना मानें । आदि नाम का भेद ना जाने ।
कैसे जीव हम समझायें । भेद यह सारे हमें सुनाये ।

साहिब वचन

कहें कबीर धर्मदास सुनाऊँ । भेद यह सारे तुम्हें बताऊँ ।
सज्जन जन जो कहलावें । शरण तुम्हारी दौड़ के आवें ।
तन मन से जो लगाये ध्यान । उसी को तुम सुनाना नाम ।
जब देखो तुम सच्चा ज्ञान । उसी को देना तुम बीरा पान ।
जीव को कहना निर्भय ज्ञान । जो हो ~~दास~~ भक्त तेरा महान ।
मूरख सम्मुख तुम नहीं जाना । वचन हमारा हृदय बसाना ।
ज्ञान मूरख को नहीं बताये । नहीं ज्ञान को व्यर्थ गँवाये ।
दुर्मति जन तुम जिसे समझना । भेद छिपाकर तुम उससे रखना ।
ज्ञानी जन को नाम सुनायें । पुरुष को हृदय जो बसायें ।

साखी :- मूरख को नाम नहीं सुनाइये, कहें कबीर विचार ॥
ज्ञानी से नहीं छिपाइये, सुनिये सतशब्द का सार ॥

चौपाई

घट भीतर देखो बीरा नाम । हृदय राखो विवेक सुजान ।
घट घट राम बसे हैं भाई । बिना ज्ञान ना देत दिखाई ।
जो भी करता अनुभव ज्ञान । पहचाने वही आतम राम ।
आत्म राम भेद जो भी पाया । भेद वो अपने सभी मिटाया ।

Date

हृदय नयन से देखो भाई | तभी देंगे तुमको राम दिखाई |
सब घट व्यापक सबसे न्यारे | वही राम बसे हृदय हमारे |
अकह नाम कहा नहीं जाये | घट घट वह बसता जाये |
आत्म राम को जिसने पाया | हर जगह वह आप समाया |
जहाँ देखा वहाँ आप समाया | ब्रह्म छोड़ कोई और ना पाया |
वही मत हम तुम्हें बताये | दूजा कोई ना उसको पाये |
ज्ञान ऐसा तुम्हें सुनाया | जो नहीं माना काल ने खाया |

साखी :- अजर पुरुष कोई एक है, अजर लोक स्थान ॥
कहें कबीर संसार से, उसी पुरुष का ज्ञान ॥

सोरठा साखी :- ज्ञान उपजे सतनाम से, सुन ज्ञानी धर्मदास ॥
नाम ब्रह्म स्वरूप है, एक नाम विश्वास ॥

चौपाई

एक नाम की राखो आस | नहीं तो बनो काल का ग्रास |
नि: अक्षर होता आदि नाम | इसी नाम से पाते सच्चा धाम ॥
सोहम शब्द निरक्षर वास | उसी शब्द को जपते दास |
आदि नाम निज सार है भ्राता | यमराज निकट ना इससे आता |
शब्द ज्ञान हम तुम्हें कराये | यही शब्द हंस तुमसे पायें |
सार शब्द का सिमरन करना | सहज अमर लोक में बसना |

सिमरन बल

सुमिरन का बल ऐसा होय | कर्म काट सब पल में खोय |
कर्म का जाल जिसका कटता | दिव्य ज्ञान सहज उपजता |
जिसको होता दिव्य ये ज्ञान | मिट जाता उसका सब अज्ञान |
लोक अलोक शब्द है दास | जो जाना करता संशय नाश |
सुमिरन तत्व सार कहाये | काल की ताप यही बुझाये |
सुमिरन से कर्म होते नाश | सुमिरन से होता ज्ञान प्रकाश |
सुमिरन तत्व हम तुम्हें बताये | तुम हंस इससे मुक्त कराये |

साखी :- कहें कबीर विचार के, सुमिरन सार बखान ॥
भेद यह जो पायेगा, पहुंचे अपने धाम ॥

Date

धर्मदास वचन चौ०

कहें धर्मदास सुनिये ज्ञानी । जीव सन्देह मिटाओ अन्तर्यामी ।
अलख अगोचर प्रभु हमारे । अब जीवों को प्रभु उबारें ।
आदि ब्रह्म तुम अगम अपार । बजीवों हेतु आये हे करतार ।
आदि नाम गुरु मुझे सुनाये । जीवों के तुम बंद छुड़ाये ।
अजर लोक जीव पहुँचाये । धन्य भाग्य हम दर्शन पाये ।
अमर वस्तु आप हमको दीन्हे । जीवों के सब दुख हर लीन्हे ।
सतगुरु चरण हृदय बसाये । सूर्य प्रकाश ज्यों फूल खिलायें ।
सतगुरु ज्ञान हमें कराये । आवागमन से हमें बचाये ।
सन्देह मेरा सभी मिटाया । शब्द में आपका हृदय बसाया ।

सोरठा :- परमात्मा आत्मा सकल, दिये मुझे समझाय ।।
अमर वस्तु गुरु दिये, अलख नाम सुनाय ।।

साहिब कबीर वचन

ज्ञान उपदेश मैं तुम्हे सुनाया । जीव हृदय जिससे ज्ञान समाया ।
इस ग्रन्थ में हम नाम बताये । सूक्ष्म रीति से ध्यान लगायें ।
आदिनाम जाने यह संसार । पहुँचे भक्ति कर दरबार ।
आदिनाम है सन्त कबीर । जो जन जपे छूटे भवपीर ।
पहचानो भाई आदि नाम । तब हंसा पहुँचे अपने धाम ।
पूर्ण गुरु ज्ञान उपदेश सुनाये । नाम ले चेला शूर कहाये ।
विनती सुनिये सन्त सुजान । जोड़ना अक्षर जो भूलें नाम ।

इति श्री ग्रन्थज्ञान बोध समाप्त